बुद्धिमान के लिए श्रीगुरुमाई के हितोपदेश

शनिवार, २८ नवम्बर, २०२०

प्रत्येक शब्द मायने रखता है।
क्यों?
एक शब्द में एक मन्त्र की शक्ति हो सकती है,
जो उसमें विश्वास रखने वालों के लिए उद्धारक है।
एक शब्द में एक श्राप की शक्ति हो सकती है,
जो उसे स्वीकार करने वालों के लिए विनाशकारी है।
एक शब्द व्यक्ति को उस ज्ञान तक ले जा सकता है जो उसे मुक्त कर देगा।
एक शब्द व्यक्ति को निराशावाद के गर्त में ढकेल सकता है
और उसे उसकी अपनी ही आशाहीनता में जकड़ सकता है।
आश्वासन का एक शब्द उन्हें पंख देता है
जो अपने जीवन में महान उप्लब्धियों की आकांक्षा रखते हैं।
आक्रोश का एक शब्द उनकी महत्त्वाकांक्षाओं को
छिन्न-भिन्न कर देता है जिन्होंने
स्थायी भविष्य बनाने में
अपना सर्वस्व लगा दिया है।

अपने शब्द की शक्ति पर चिन्तन करो
और इस पर भी कि तुम अपनी सत्ता से उस शब्द को
बाहर इस ब्रह्माण्ड में कैसे जाने देते हो।

दूसरों के शब्दों का प्रभाव जो तुम्हारी सत्ता पर पड़ता है,
उसकी शक्ति पर चिन्तन करो।
क्या वे सदाशयता की स्वर्ण-खान को पा लेते हैं
या वे दुराशयता के रसातल को अनावृत करते हैं?

यह समझो कि जिस चीज़ को सुधारा नहीं जा सकता,
उसमें अर्थ निकालने का उद्यम करना निरर्थक है।

यह समझो कि तुम्हारा अपना भाग्य है
जिसे स्वयं के निराले सौन्दर्य और सुगन्ध के साथ
फलना-फूलना ही है।

उसे छोड़ दो जो तुम्हें, तुम्हारी अपनी प्रतिज्ञाओं का
सम्मान करने के अधिकार से और
तुम्हें तुम्हारे अपने संकल्पों को पूरा करने से वंचित करता है।

उसे जाने दो जो आत्मा की प्रशान्ति की ओर
तुम्हारी अपनी यात्रा में रुकावट डालता है।

प्रत्येक दशक, प्रत्येक शताब्दी, प्रत्येक युग
के अपने गुण और दोष होते हैं।
उसमें अपना ही सम्मिश्रण होता है,
साधुता और दुष्टता का,
उत्कृष्टता और जघन्यता का, नैतिकता और भ्रष्टता का,
स्थायित्व और भंगुरता का, सम्मान और अवमानना का,
लाभ और अलाभ का, फ़ायदों और कमियों का,
स्वतन्त्रताओं और अवरोधों का, परोपकारिता और स्वार्थपरायणता का,
आरोग्यता और व्याधियों का, सुरक्षाओं और ख़तरों का,
सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं का, वरदानों और व्यवधानों का,
रक्षक-तारक गुणों और ठोकर देने वाले रोड़ों का।
मनुष्य के मानस में,
उस संसार में जिसे मानव
इस सुन्दर नील ग्रह पर और इस समग्र ब्रह्माण्ड पर आरोपित करता है,
ये द्वन्द्व भरपूर हैं।

एक ओर यदि कोई अपने हृदय में छाए गहन अन्धकार का बचाव कर रहा है,
और दूसरी ओर मन्दिर में दीपक जला रहा है
तो इसका क्या लाभ?
वह ऐसा किसके लिए कर रहा है?

अतः, बिना रुकावट के
चौबीसों घण्टे प्रवाहित होने वाले
अपने श्वास-प्रश्वास का सम्बल लेकर
इस अन्तर-प्रक्रिया पर चिन्तन करो।

अपने कमाण्डर, परम आत्मा से सम्बन्ध-विच्छेद किए बिना,
चौबीसों घण्टे तुम्हारे इशारों पर चलने वाले
अपने परिशुद्ध मन का आवाहन कर,
इस अन्तर-यात्रा पर चिन्तन करो।

सोचो, क्या सम्भव है।
सोचो, क्या किया जा सकता है।
सोचो, उस जीवन के बारे में जो तुम जीना चाहते हो।
सोचो, तुम किस तरह अपने ज्ञान को साझा कर सकते हो।
सोचो, कैसे तुम आज, कल और परसों
चट्टान की तरह अडिग बने रह सकते हो।

जब तुम्हारी विचार-प्रक्रिया का ख़ाका तैयार किया जा रहा है उस दौरान
उन चीज़ों को तुरन्त कार्यान्वित करना आरम्भ कर दो जिन्हें तुम अभी कर सकते हो।
अपने संसार की रूपरेखा इस तरह बनाओ
कि तुम हर पल में, हर घण्टे में, हर दिन, सप्ताह, माह और वर्ष में
हृदय की दिव्यता की अनुभूति कर सको।

ज्ञान और वैराग्य के लेंस का प्रयोग करते हुए,
अपने विचारों और कर्मों को व्यवस्थित करते रहो।

सिद्धयोग साधना है यह समझना
कि सभी चीज़ें अपने वास्तविक सत्त्व से जगमागाएँ
इसके लिए तुम जो यथेष्ट प्रयत्न करते हो
वह भाररहित सहजता से हो सकता है और उसे होना भी चाहिए।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।